PHILOSOPHY

PG III Sem. (Indian Logic)

अनुमान (न्याय दर्शन) – (B)

→ न्यायसूत्र में अनुमान को 'तत्पूर्वकम्' कहा गया है।

→ वात्स्यायन ने न्यायसूत्र भाष्य करते हुये 'तत्' शब्द का अर्थ स्पष्ट किया है। वात्स्यायन ने कहा है कि 'तत्' ~~लिंग~~ 'लिंग-लिंगि दर्शन' अर्थात् व्याप्ति तथा लिंग दर्शन अर्थात् हेतु या उदाहरण या चिह्न के ज्ञान के पश्चात् जो ज्ञान प्राप्त किया जाता है, वह 'अनुमान' है। ~~अर्था~~ यथा – पर्वत पर धुँआ (लिंग) देखकर प्रत्यक्ष के आधार पर लिंग-लिंगि (व्याप्ति) – 'जहाँ जहाँ धुँआ है वहाँ वहाँ आग है' का ज्ञान अनुमान है।

→ नैयायिक जयन्त भट्ट ने न्यायमंजरी में अनुमान का लक्षण करते हुये कहा है कि 'पक्षसत्व आदि पाँच लक्षणों से युक्त हेतु के ज्ञान से व्याप्ति स्मरण के द्वारा उत्पन्न परोक्ष साध्य-विषयक ज्ञान ही अनुमिति है। अनुमिति का करण अनुमान है अर्थात् अनुमान प्रमाण से अनुमिति ज्ञान होता है। यहाँ हेतु या लिंग के पाँच लक्षण इस प्रकार हैं – पक्षसत्व, सपक्षसत्व, विपक्षासत्व, ~~अबाधितत्~~ अबाधितविषयत्व और असत्प्रतिपक्षत्व। हेतु के इन पाँच लक्षणों में से किसी एक का भी अभाव होने पर 'सद् हेतु' न होकर 'हेत्वाभास' हो जाता है।

→ न्यायदर्शनोक्त 'तत्पूर्वकम्' पद की वात्स्यायन प्रदत्त व्याख्या तथा जयन्त प्रदत्त व्याख्याओं में भेद है। यह भेद मुख्यतः प्रत्यक्ष और स्मृति को

Scanned with CamScanner

लेखा है।

→ वात्स्यायन जब यह कहते हैं कि अनुमान 'लिंग दर्शन' या 'लिंग-लिंगि दर्शन' पर आधारित है तो स्पष्टतः वात्स्यायन अनुमान को प्रत्यक्ष पर आधारित स्वीकार करते हैं। दूसरी ओर जयन्त जब अनुमान को लिंग-लिंगि संबंध की 'स्मृति' पर आधारित करते हैं तो ऐसा प्रतीत होता है कि जयन्त के अनुसार अनुमान स्मृति पर आधारित होता है। ध्यातव्य है कि स्मृति और प्रत्यक्ष में भेद है। इस स्थिति में प्रश्न है कि अनुमान का आधार क्या है - प्रत्यक्ष अथवा स्मृति? अर्थात् अनुमान की परिभाषा में प्रयुक्त 'तत्' शब्द किसका संकेतक है - प्रत्यक्ष का अथवा स्मृति का?

इसका उत्तर भी जयन्त प्रदत्त 'तत्पूर्वक' की व्याख्या में ही मिलता है। उनके अनुसार 'तत्' शब्द सर्वनाम है, अतः यह प्रत्यक्ष को भी संकेतित कर सकता है तथा स्मृति को भी, किन्तु यहाँ 'तत्' शब्द मुख्यतः प्रत्यक्ष को ही संकेतित करता है क्योंकि अनुमान में व्याप्ति (लिंग-लिंगि संबंध) का भी स्थान है तथा लिंग दर्शन का भी स्थान है। चूँकि अनुमान में व्याप्ति की भूमिका लिंग दर्शन के पश्चात ही प्रारंभ होती है अतः अनुमान का साक्षात् कारण प्रत्यक्ष ही है। जयन्त के अनुसार लिंग-लिंगि के सम्बन्ध की स्मृति तो लिंग दर्शन के पश्चात् ही होती है। अतः अनुमान में प्रत्यक्ष की भूमिका प्राथमिक है तथा स्मृति की भूमिका परवर्ती है। अतः अनुमान की परिभाषा में 'तत्' यद्यपि प्रत्यक्ष का ही बोधक है तथापि यहाँ स्मृति को भी स्थान प्राप्त है।

Scanned with CamScanner